महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

११/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं, अपने मूल स्वरुप में बैठें... अपने मूल स्वरुप का अनुभव करें... सभी देखें, अपने आप को, मेरा मूल स्वरुप बेहद सुंदर है... गौर से देखिये, यही मेरा सत्य स्वरुप है... मैं आत्मा सितारा, स्टार, सफेद रंग में चमक रहा हूँ... अपने आप को अनुभव करें... देखिए क्या अनुभव हो रहा है... जितना-जितना उसे देखेंगे, उतना सत्य स्वरुप अनुभव होता जाएगा...

मूल स्वरुप को जितना अनुभव करेंगे, उतना परिवर्तन होता जाएगा। आत्मा जब मूल स्वरुप में आती जाएगी, अपने आप उसके सारे सूक्ष्म कर्मेंद्रियां और बाहरी स्थूल कर्मेंद्रियां अपनी स्थिति में आती जाएगी। उनको लाना नहीं पड़ेगा। अगर आप बाहरी किसी बातों को स्थिति में लाने का प्रयास कर रहे हो, तो यह प्रयास व्यर्थ होगा। आत्मा को प्रयास करना है अपने मूल स्वरुप में रहने का, अपने मूल स्वरुप को देखने का और जितना समय हो, उतना समय उस अवस्था में स्थित रहकर कर्म करने का। अपने आप परिवर्तन होता जाएगा। अंदरुनी से बाहरुनी सभी बातों का प्रयास एक ही करना है - मूल स्वरुप में स्थित रहने का।

अगर सभी आत्माओं की दिल सच में सच्ची होगी कि मुझे मेरे मूल स्वरुप में आना है, मुझे परिवर्तन होना है, तो अपने आप आत्मा मूल स्वरुप में बैठने का अभ्यास करेगी। उसको अलग से समय निकालना नहीं पड़ेगा। उसको समय मिलता जाएगा। सच्ची दिल से ही परमात्मा की मदद मिलती जाएगी। परिवर्तन के लिए सबसे पहली बात है सच्ची दिल। क्या सच में आत्मा चाहती है कि वह अपने मूल स्वरुप में आए? जब सच में आत्मा का दिल होगा उसे मूल स्वरुप में आना है, अपने आप वह मूल अवस्था में बैठती जाएगी। एक-एक सेकंड कर्म करते वह अभ्यास करेगी। परिस्थितियां, बाहरी सारे कर्म बंधन, कर्म संबंध, उनको ना देखते हुए आत्मा अपना मूल

काम करेगी। संगम युग है ही अपने मूल स्वरूप में आने का युग और इसी मूल स्वरूप में खुशियां भी है, मौज भी है, सारी प्राप्तियां भी है। पर आत्माएं शरीर में आने के कारण बाहरुनी खुशियों को, मौज को वही रियल समझ बैठी है।

बाहरुनी खुशियां, बाहरुनी मौज असत्य है। अंदरुनी मौज, अंदरुनी खुशियां अपने सत्य स्वरूप में है - मूल स्वरूप। सभी के पास पर्याप्त समय सदा रहता है अगर वह अपने दिनचर्या को देखें। बस दिल होनी चाहिए मुझे मेरी अवस्था में आना है, मुझे मेरे मूल स्वरूप में आना है। आत्मा जब अपने सत्य स्वरूप में आ जाएगी, अपने आप उसे सब मिलेगा जो उसे रियल में चाहिए, बल्कि वह स्वयं में संपूर्ण होगी। आत्मा के मूल स्वरूप अवस्था से वह सभी के लिए मददगार भी बनेगी। सबसे पहले अपने मूल स्वरूप स्थिति का रस आत्मा को ही चखना है। याद का रस उसके बाद आता है। पर सबसे पहले अपने सत्य स्वरूप में आने का रस को चखना होगा।

जैसे-जैसे मूल स्वरूप में बैठने का अभ्यास करते जाएंगे, वैसे-वैसे जो मायावी अस्तित्व है वह मुक्त होते जाएंगे। मायावी अस्तित्वों को अलग से मुक्ति नहीं देनी पड़ेगी। आत्मा के मूल स्वरूप में सब ताकत है। अपने आप सारे विपरीत अस्तित्वों को वह एक मूल स्वरूप मुक्त कर सकता है। बस आत्मा को मूल स्वरूप में बैठने के लिए सच्ची दिल रखनी पड़ेगी। इस संगम में आत्माएं जो पार्ट बजाएगी, फिर अपने अवस्था को लेकर, अपने पुरुषार्थ को लेकर, वही अगले कल्प में उसकी वह प्राप्ति होगी। संगम युग में हर पल, हर क्षण आत्माओं को एक ही पुरुषार्थ करना है - शरीर में रहते हुए आत्मा अपने मूल स्वरूप में रहे। क्योंकि एक बार संगम पूरा हो गया और अगर आत्मा अपने मूल अवस्था में, मूल स्वरूप में नहीं आई तो प्राप्ति कुछ नहीं होगी। अंत में सभी के पास अपना-अपना हिसाब-किताब सामने दिख जाएगा - आत्मा कितना परसेंट उसकी अवस्था में पहुंची। संगम युग मौजों का युग है ही, पर जब आत्मा अपने स्वरूप में, मूल

स्वरूप में स्थित रहकर पार्ट बजाएगी तब उसके लिए संगम युग का हर पल, हर क्षण मौजों का युग होगा।

मूल स्वरूप में आत्मा को कोई ला नहीं सकता। आत्मा को अपने स्वयं की ज़िद रखनी होगी, अपना प्रयास करना होगा। परमात्मा ताकत सभी को देता है। पर आत्मा को अपना प्रयास करना होगा। सच्ची दिल से जितना प्रयास करते जाएंगे उतनी परमात्मा से ताकत मिलती जाएगी। परमात्मा से शक्ति उन्हीं को मिलती है जिनका सच्ची दिल का संकल्प होता है। सभी आत्माएं चेक करें अपनी सच्ची दिल कितनी है। सबसे पहले सच्ची दिल चेक करना स्वयं के प्रति। स्वयं से मेरी सच्ची दिल कितनी है? आत्मा को स्वयं के लिए मूल स्वरूप में आने की सच्ची दिल होगी, तो अपने आप वह उस दिशा में बढ़ती जाएगी और हर दिन उसको उसके अंदर परिवर्तन दिखेगा। हर प्रकार से दिखेगा। परिवर्तन के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। परिवर्तन होता जाएगा।

इसलिए सभी आत्माएं आज चेक करना - क्या सच में आपको आपके मूल स्वरूप में आने की सच्ची दिल है? अपने से सच्चा रहना। सच्ची दिल वालों का संकल्प पूरा होता है। सभी को आज का यह होमवर्क है।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः